मानव जीवन प्रकृति का दर्पण सभी जीव प्रकृति के पहरेदार

अशोक मानव

प्रकृति में फैली हर वस्तु के गुणीय विकास से मानव जीवन की उत्पत्ति होती है। सृष्टि में सर्वप्रथम जलीय जीव पैदा हुए हैं। उनके द्वारा छोड़े गये तत्व से स्थल का निर्माण हुआ, फिर स्थलीय जीव पैदा हुए। जब इन सुगन्धों से प्रकृति खिल उठी तो मानव जीवन पैदा हुआ। प्रकृति के हर जीव इच्छित पूर्ति के साथ द्रष्टा बनकर इसका आनन्द लेते हैं। इस आनन्द से एक नई ऊर्जा निकलती है जो प्रकृति के आनन्द को सुरक्षित करती है। प्रकृति के इस आनन्द से मौसम परिवर्तन होता है। यही क्रिया प्रकृति का सम्भोग कहलाती है। जिसके परिणामस्वरूप सभी जीव का निर्माण होता है। हर जीव की अपनी अलग इच्छाशक्ति होती है। जिसकी जैसी इच्छाशक्ति होती है, वह वैसा गुण पैदा करता है। अपने गुण के लिए वह फल होता है विपरीत गुण के लिए दुर्गुण। पर प्रकृति के लिए हर गुण एक फल है जो दूसरे के निर्माण में सहायक होता है।

मानव जीवन प्रकृति का दर्पण होने के कारण हर गुण को अपने में समेटता है। अपने अर्थ में उसी व्याख्या प्रतिबिम्बित करता है। मानव जीवन प्रकृति में जहाँ भी जा सकता है उसके अर्थ को पहचानने का प्रयास करता है। पहचान करने के बाद उसे अपने अर्थ में मिलाना चाहता है। अपना अधिकार स्थापित करते हुए उसकी व्याख्या करना चाहता है और उसकी सौदेबाजी शुरू कर देता है। प्रकृति का गुणीय फल कभी किसी का सौदा नहीं होता है। वह तो गुण के आधार पर चुम्बकीय क्रिया से चलायमान होता है। **दर्पण होने के कारण मानव जीवन इसका दृष्टा हो सकता है कर्ता नहीं।** कर्ता वही हो सकता है जो प्रकृति के गुण में सहयोग करने लगती है। ध्यान क्रिया के निरन्तर अभ्यास से व्यक्ति अपना तीसरा नेत्र खोलता है। जिसके दर्पण पर भूत, भविष्य, वर्तमान की किसी भी घटना की जानकारी अंकित कर सकता हैं। इसकी जानकारी अन्य जीव भी अपने अभाषीय गुण से प्रदर्शित करते हैं। जैसे चोर की जानकारी मानव के देखने से पहले कुत्ता सुगन्ध से प्राप्त कर लेता है। भूकम्प आने से पहले गाय अपनी आवाज से घटना की जानकारी प्रकृति को दे देती है। पक्षी तूफान व वर्षा से पूर्व अपनी चंचलता से घटना का प्रदर्शन करने लगते हैं और शीघ्र ही अपने बचाव का साधन खोज लेते हैं। मानव गुण, अवगुण अपना स्वार्थ देखकर करता है पर यह जरूरी नहीं जिसमें वह उसे देख रहा वह सही हो। **सच तो गुण से पहचाना जा सकता है। स्वार्थ से नहीं।**

मानव समाज में ऐसे विश्वास फैले हैं कि बिल्ली रास्ता काट देगी तो कार्य नहीं होगा। छिपकली गिरने पर शुभ–अशुभ का लक्षण प्रदर्शित होना। इसी तरह से बहुत अन्य अनुभवी उदाहरण समाज में मौजूदा हैं जिसे लोग जानते हैं। बहुत से लोगों का इस पर अपना एक विश्वास भी होता है कि ऐसा हुआ

तो ऐसा होता भी है। **यह घटना प्रकृति की किसी ऊर्जा की होती है जो अपने सम्मोहन में अन्य किसी जीव से प्रदर्शित करती है।** जो भी घटना होती है उसका कोई कारण छिपा होता है उसकी यह घटना, घटना से पूर्व सावधान करने के लिए होती है। ऐसे गुणों को पहचानकर व्यक्ति व्यर्थ की समस्याओं से बच सकता है।

प्रकृति का प्रदूषण मानव रोग के बारे में दिखायी देता है। यहाँ पर रोग को दूर करने के लिए प्रकृति में पेड़ पैधे अपने सम्मोहन से विरोधी गुण की ऊर्जा को खत्म करते हैं। अधिक प्रदूषण बढ़ने पर इन्हें पहचान कर और अधिक जल्दी विरोधी ऊर्जा को नष्ट किया जा सकता है। इसी जिन्दगी का अर्थ कहता हूँ कि पराया कोई नहीं पहले उसके गुण को पहचानो यह नहीं पहचान पा रहे हो तो उसे दोषी मत कहो। प्रकृति के हर तत्व का कोई न कोई गुण अवश्य होता है। गुण से गुण का आदान प्रदान होता है। उसका दिखावे से कोई अर्थ नहीं होता है। जो गुण है वह अपने गुण में अवश्य मिलेगा।❐

www.suryaashram.com